No. ५४०८-घ

Title राजनीति भाषा

Author ✗

Extent ५८ Age ✗

Subject नीतिशास्त्रम् - संपूर्णम्

24

नं० ५४०६-घ

राजनीति भाषा (नीतिशास्त्रम्)

पत्राणि ५८ (सम्पूर्णम्)

नं० ४११

5401/58 C 20

नं. १२५४

राजनीतिशास्त्र

नीतिशास्त्र



ग
१

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ प्र
णवतेह्यो श्रीविमलको
जो त्रिलोककृदाश ॥ ब्रह्मा

श्रीसरस्वतीगणपतिहोइस
हाइ॥दोहरा॥वकृतशास्त्रवलो
ककेहेदरवचननिकार॥राजनीतस
मूरकोवरागनकरोविचार॥१
पै॥जोरहउकडसकूनारहितस

ग
२

विकुमित्रकुदेश॥ श्रीमेकुराजकु
मंत्रहितजीवकुदेशक्लेश॥ दुष्ट
नारकेवोलतेपाठकुपिण्याटेड़
नेदककींसगतकियेपंडितभोड़
घलेइ॥ दुष्टनापाठमित्रस्रहसेव

कउनतेरेह॥सर्पवैसेजनहृद्वारविबे
इकदिनमरणकरे॥नारद्दोउपाउ
हमतउहूवैसेघरमाहि॥नदीती
रकेघनकोकछुभरोसोनाहि॥य
नराबेग्रापदाप्रार्थयनकरावे

ग ३

नाः॥ सदाश्रयनीरहाकैरयनना
रीहित्कार॥ पकतजैकुलकुलि
येकुलम्पागेषुरहैत॥ पुरम्पागेहि
नदेषाकैदेषातजैश्रयनैत॥ हृति
नहींकायवनहीविषाक्रापतिना

हि॥नहिआदयजिहदेममैकोव
सिहिनिहमारि॥पकपाइयाहठ
कैरतवाहिउठावैओर॥जबलग
आगाहठनहीतवलगतजैना
होर॥जहांमारनदीनहीविघा।

ग
४

जोतमीनाहि॥नहीरहियेतिहदे
सैमेवारोनहिजिह्ममाहि॥ज्ञात
तेजसेनपक्षोतनजङ्कपटो
मीत॥स्वामीनजिघेज्ञातिकृपाल
तेजकुतत्रसेकाप्रीत॥प्रवित

दसकोऽमागिये ब्रतउपड़ीमागा
कृपलाकृतक्षोमागाप्रभुरहेनति
नमोलाग॥बारदेहियनंकेगापवु
उभिव्रहितनार॥पनष्पावैजवपु
घपेष्पाउमिलेरहवार॥नरपगाम

ग २

पवनगीलज्ञायरमनश्राहि॥त
हानहिपेपकदिनज्ञहोइहंपा
वोनाहिंवेधपरीक्षाभीरहै॥का
रनश्रीकादास॥मित्रपरीक्षाश्रा
पदा॥त्रयापरीक्षायनवास॥रो

गभीरद्रभिरवैभैराजद्धारशमः

शान॥२६॥राजविग्रहविब्रमोवा

धवंतज्ञान॥इतिश्रीराजनीतिशास्त्रे

प्रथमो ध्यायः॥१॥ दोहा॥ मूठलो

भसमाकपटरूठ्यविद्यामोच

रा
८

सानदोषथरह मारो मेम... राय
करोव ॥ जोनिसे कोसागां करके
श्रनिसे वाहि ॥ जिनकानिश्चा तातेहै
फूटश्रनिश्चा श्राहि ॥ नदीगिरांवे कूल
कोऊलहिगिरावेनार ॥ ३ ॥ नकापकह

6

भावैहैरहिविप्रापमेंभार॥चारप
टारथमेकछुजिनकोपकोना
हि॥जन्मजन्मदुःखैहैतिनौकाम
रणभलाजगमांहि॥नारीकुब्रकु
रूपकीवचनरविकाहमनाहि॥

ग
होइस।रूपकुलहीनमैंआइतन
दिसासाहि॥कंचनहोइजोकी।
बमैबिधमैश्रमतहोइ॥बिधाता
रीनीवमैकारोलीजैबोइ॥पुरष
नतेहिठणीरूयासंसाबर्गुन

नेनार॥ उद्धिवोगलीनारमैकाम
वारग्रहवार॥ दानमक्तभोजनम
क्तभोगशक्तिरतिजारि॥ उत्तमवि
याग्रहविभवजनगवउतपमाक
लस्थारि॥ ग्रह्णाकारीपुत्रदोरग्र

ह्मिरै बोलै नार ॥ यन अपनें से
तो बमन वार ह्वा गसंसार ॥ १३
जो पालै पिता मो ह्वत पित आज्ञा
मा हि ॥ मित्र मो जो मा वार है नार व
ति बता म्राहि ॥ ७ ख मो ठा पाके कपर

कौ

उटेरूवरूमित्र॥जोविषकेघट
पयडगयसौंतिहज्ञानचरित्र॥श्रा
त्रहोइकैजोकरैमित्रापकोवात
नहाविस्वासनकीजियेअंतक
रैवरूघात॥शाहपारिंश्योना।

ग तीनदीभूपश्रुहनाग॥इनकाकथा
९ इनवारेहेराहियेश्रापंसभार॥मन
9 मैकारजचिंतविघेकहियेनाग
गटाइ॥गुपतराखियेमंत्रजोश्रग
टविफलहोइजाइ॥सर्पकूरको

मंत्रहैखलकोमंत्रनमूर ॥ मूराव
तांईकछहैतांतेकछविदेस ॥ पा
राधीनतांतेकछजामैमसाल्हैकस
इतिश्रीराजनीतग्रथेद्वितीयोध्या
यः ॥ २ ॥ दोहा ॥ वहुविकारहैलाइमे

२१

10

नाउनैमैग्रुविकार॥ताते हतग्र·
हस्थिकोताउनवङुगुनकार
पंचवरघतकलाउहैताउनहैब
टमाहि॥पुत्रमित्रतनबहोतहैजब
बोउसनकनाहि॥तवलगविद्या

कोपढैनवलगाच्छटमैषाण॥त २
हाथनोपडंवैनहीजेहांपोंछ्वि
हान॥माघमझइटोनोश्रवलमा
दांश्रनश्रव्रुश्नाद॥तोकदाविनव
ऊभीवलैतैतोनतजैमर्याद॥ताब

२॥

नरसीमिमितनरपजोमानसकु
लवंत॥३ सतेइरानहोतनकछुम
दाग्रादिय्रतपंत॥शैलशैलमा
णिकनहीगनगजमोतिनना
हि॥वननवननैमैवंदननहीसाथ॥

नगरग्रामहि॥देषोदेशमैनाहै ग
देसदेसमैजात॥श्रीमादेसनदेषिये ६१
जहांसहोदराभ्रात॥मूरषनरकोक
छिपेप्रगटवतरानरभंग॥जोश्रह
श्कांटाठुभेहदनेववनवहष्णेग

ग १३तोयियेनज्ञानकोतंह्रोवेत्र
१२ पवान॥ पूज्यह्रोइसमजगतमेग्र
रुणोवैसनमान॥ मातापितामेश
त्रुहै१३पढावतनाहि॥ सोभान
पावैसभामेजोवकहेसनमाहि

श्रायचतर्थिलितपठेनरिक्ला
रिवैराग॥निसकरमैनेसेकरे
श्रुद्धिंवतवडभाग॥जोहरिंय
पुरवौशरहबफरहककैरेहरिं:
परपोहपुवतेहेतहैश्रानंदत्त

ए
१३

कुलंथ॥ एकविंसतेनिकस॥
कैघरहैहैवनघात॥ मैंकुहू॥
ततेहोतहैसवकुंदवकोनाम॥
लोभीकुसतनोघनहोडइविन
कोधर्म॥ भागहीनकोस्वथनहै

स्राग्रहीनकोकर्मे॥भयस्थानडउ १
भिवतेतुरैसँगवनचोर॥कटके ४१
विरानाटैघकेहूरभागकितहे
र॥स्त्रत्रवसंनचरसेजतियाव ४
वविरानेसागा॥क्षाउदीजियेटे

ग थकेहारिहिजावैभागा॥ जहंठा
१५ ऊरसुजानहीथपनाकरहिनि
होइ॥ नहंठाकलहहोवैसदासं
पनरहैनकोइ॥ साधसंगतमेर
हैतिमनविकारलगंत॥ ॥

लैवंदनसपेंनविवेशीनलता
नतंजंत॥शीलशांतग्रभ्पासग्र
लमिश्चगेहंपांडित॥इनकोको
रलगतननहीपपंकोयननित
इतिश्रीराजनीतिशास्त्रेनतीयोध्यायः ३

१
१५

दोहा॥ब्रह्मविष्णुहरनउठैनरचिन·
वैपतीवात॥सोप्रभुप्रकोजग
नमैकोनमस्ककोजात॥पवना
गणनासर्वमयपशाह्वकाअवलो
क॥अर्थधर्मकाममनमुक्तकरनमै॥

15

कृपालीहोइ॥ अवगणहननतय
मिष्ठनअकृतेजाउह॥ प्रकास
शोकववावरारिष्टनहोइनका
कैरैविनास॥ ऋणीऊमारीको
पिता॥ ३ह सबैवैरीहोइ॥ ॥

ग इनतीनोकोनैननमैनिद्राकव
१८ ऊनहोइ॥ यद्यपिरूपकोरूपहै
वह्हीनतनछार॥ नदपिविद्या
वानकोसभामाहिंग्रथिकार॥
स्यालसभामैसिंघजोंकागान

माह्रिमगल ह्रंसक्रैमैसोमेत॰
दीमृकनमैवाकाल॥ह्रंसकम
लमहृहस्रैवर्वेलाल्हिं ह्यपिराहि
वीरोहमसोमेलकंराधंडतसजन
माहि॥कथमासज्वमाहिस्रुल

ग शूलरोगभेदाल ॥ अतीसाररोगहृ
१८ तमोहरगाउः खेमेघुनडाल ॥ क
फनाशवाधामितलेखनतेज
रजाइ ॥ पितनाशखतनानतेत
नमर्दनतेवाइ ॥ जनताउपनीता

नृपतविद्यागृहदेश्मन॥ पंचव:
पिताइहजगनमेजेमानेथय्र
जननीसामसम्भूपतिविद्यागृहती
य॥ पंचोमाताजगतेमेसमफ
गविद्योजीर॥ काटनकूटन

ग
१८
18

तापन।चसनसनसनपरीतावार
सगुनसीलकुलकसैरहपरो
लाषहपविचार॥अगनराह
नेरनकठिनपतैसहैसना३
गजासमंकेवनलै३ह३ःव

सहो न जाइ ॥ बरनौं का गुरु कृपाल
ा कृपाला का गुरु कृपाग ॥ नारी का
गुरु कौन है सभ का गुरु श्रमणा ॥
दुख बर्णि के गाह को नीच बर्णि को
दुजाइ ॥ जो स्त्री वै बासि वै अपार स

ए॰ १९

भगुष्माननमोह॥ छलेनभूप
वाकारनकोग्रहहैनृपग्राधि
कार॥ जोराजाकोपानयनहूदहे
रवंदरा॥ तववेदपंउगजपहोमधा
उनदेहे॥ ग्रामीपवारनितदेस्योरागनु

गहितमोइ॥ बनरायीनप्रवीन
पटकौपथेकननवान॥ परहा
दरकोआनिथेगरूबसीठउला
द॥ याहतानहवारश्रुहसामी
भक्तचवगाइ॥ होरकदीमपिता

रा॰
२॰

मकोसोपंचोमह्यार ।। आगुवेट
श्रप्पासैसैसभषियाद्रासोहेइ
समगुनैसैंसगुकनरसोगुकार
कहसोइ ।। इति श्री राजनीतिषास्त्रे
वतर्थोध्यायः ।। दोहा ।। प्रथमबि॰

मावैष्ठिजनकोऽभनगो। कांथव·
श्राय॥ स्रणमेयफलमोलंहैस्र·
कृश्रेहुणरताय॥ सभयाणस्रैमेनि
भुननाखबनवित्रयकान॥ वि
वारमिलैयेसभनमेवहूलैषक

२ परथान ॥ नजकु मित्र सो मित्र ता न
२१ नकु राजकु सा ज ॥ शिष्या नजकु
कु शिष्य को नजकु नार को राज
उः षकु राज ने लोक को उषकु
मित्र ते मित ॥ उषकु नार लेक न को

उघकोसिवग्रफविता॥ अघवीमसि
ष्यारानको॥ दोहा॥ केहरागर्दभखान
हकक्रुकेंटवाघमजान॥ इनघट
केगुणवीमपरवलैसनरपहारत
न॥ छंद॥ केहरातेगुणपकपकग

ग णवकतेलेवै ॥ कनककलसेगनवा
२२ र तीनगारदमतेलेवै ॥ वाछ्रते ॥
गनपंच ॥ स्नानतेघर्गुणिश्रानें ॥ राज
नीतनकेवीचरीतरइकानकवणाने
रहस्यिकाकोबीमैरेजोनरपरइट्टैया

रणकेरे॥ सकलशत्रुजीतेसम ग
काननकाहूकेपैरे॥ अथकेहर ६६
गुण॥ कारनछोटाकेवडाहोइ
सकाहीलेइ॥ मौंकेहरनिरञ्ज
लसीमगकोजाननदेइ॥ अथग ३

ग रदमगुण॥ सीतउस्मसिरपरमहै
२२ छकितमारवलाउ संतोषीवारा
छुगे गारदमतीनस्भाइ॥ अथस्वा
नगुण॥ स्वामीभक्तमैनिपुनहै॥
श्रस्मनीरवलवान॥ बाउवफुतसं

तोषमोरहगणलीजेखान॥स्व
थकर्कटगण॥शुद्धहोइउरिक्रान
कोवांयवलेतउलाइ॥तिरीच्छा·
सोमिलभोजननकैरैऊकर्कटचार·
हमाइ॥प्रथवायसगण॥सवाया

ग २८ नविकासरूवैनगूठमैथुनीथीर
कालसमैंसैसग्रहकैंकागपांवग्र
णकीर॥अथनाशंसतापमनग्रह
काडहचरित्र॥मैथुनमानग्रप॰
मानइह॥प्रगटनकरियेमान॥

इतिश्रीराजनीतिशास्त्रेपंचमोध्या
यः॥५॥दोहा॥ दोद्विजदोन्रपदोअ
ग्रमपिंदपतिदोवैल॥ इनकेवीच
नजाईयेहरडधरायकैगेल॥ गा
जमदहतनजराथमोशृगोतनद

ग
२८ सह्राय दुरजननेतनजदेसकोजो
रह्राथयरमाथ॥गनग्रक्रसमोह्रो
नवमतान्ननमाथनंरंग॥स्त्रीव
सह्रोश्वोवैडुरजनन(वडगतिंस
ग॥विद्यागानश्रह्रारायनश्रकपंच

मध्यापार॥ ३ नमेताजनखाद्रि

येकरेमण्डगयगवार॥ स्त्रियमोव

धीमप्रकनमेशुनदेवाइशाय॥ ९३

क्रकर्मेदृश्यगटनकदृतवनाइ॥

श्रावारीसतोधमोजोपकायविन

ग रुनकोजेमोहेनहोयनलोभीऊ
२२ निन॥ जलस्थानसावरजनंहोतंरा
हंसचलिजाइ॥ भागपवानइवीस
केउणिजनजाव्हहाइ॥ श्रुतिस्
येनहिहोइयेकठूकठोरमनंमा

हि॥ मृघे लकरै काटि घेटे औ काट
ननाहि॥ अति कोमल न हि होई घे
कलु कठोर अवहार॥ जौं के ले
कोमृल मडु उघार तल गे ना
वार॥ इअक माइ के घाई पे

ग्र
२२

बेउदानतेहोइ॥ तौंजलकूपतउ
तेकाउतमीदाहोइ॥ जिसमानुष·
केघरथहै तिसकोहैसभकोई॥
सोईसबतेवडादेजगमैजीवत
सोइ॥ घरथहीनघरदानविनसु

स्तुयतेनान ॥ नवसहोतउनकी
छियाजैगोबमतितपान ॥ अथः
शुजिपैजगनमैदेहशुजिपैनाहि
श्रेष्ठहोइवंडालजगयनहैजिह
गहमाहि ॥ । ॥ इति श्री राजनीति

ग्र
२८

॥अष्टमोध्यायः॥८॥दोहा॥ दारिद्र जो॥
जीतै कष्ट मी कर अभ्यास न देव का
र॥ विद्या कर जीतै सभा धन करा॥
जीतै नार॥ मध्य ज्ञाता वावी रद्ध
रूप दकोचंद॥ वड तै वड तै वडन

हैजोथरनीमैंइंद॥काममोहवि-
घग्रथंलछनपरवतजारि॥थी
रथीरहोतहैयेपंचोजगमाहि॥
वडीपंडिताईरीतिसेजिसकेधनकी
शुद्ध॥सदापापमकेइकाकैवहै।

ग
२९

यमकीसिद्ध॥३॥जननकीपउल
जसायसमागमवित॥४॥णकेरे
दिनैरैनैमैनानेदेहग्रनित॥रूप
विनासैमारकरतपहिविनासैको
य॥हरवनितनासैगामनग्रुरलोभ

नेतेबोय॥स्रतनंवंतीपतिकौभिषयाख्रह
पतिव्रताणविउ॥तिस्रकाजीवनस्रफ.
लैहैजनहृथ्वरनारविविउ॥पतिस्रानहामे
होइविनवतनसिटमिटवोल॥वहनारी
मनकोहैद्रेस्रेरानस्रमूल॥नारिहूपीम
लीनहै

ग
३१

कलहनउतरवाद॥तिहनरको।
कछुहखिनहीजगमेजीवनवा
टद्वैवसायहिजभरूवसद्वोरस्व
रथवसश्राहि॥पंउनवग्रराघहरी
नकैजोकरजानैताहि॥इतिश्रीरा

जनीतिशास्त्रेसमस्मोध्या ॥४७॥ दो
हा ऊवहोतवसमभनकेस्थलनि
दानरनीच ॥ स्यावेदतेहोतवस
समभ्राक्रमरैवीच ॥ श्रगनतसेंद
नेमगुरुमतिनलपाइ ॥ नारनतसेन

ए १नतेकालनसरुषहिघाइ॥मंगे
३८ देतनवअकतुतेभीवअकहू
३॥दंतकडेतेहरदकीवडिआई
नेघटाइ॥वड़ासैगोवड़कानकोने
नहोइनघटाइ॥पर्वनमोधिमेंवैढे

जैगजंदतनुराउ॥ श्रनपत्रीकोग
तिनहीखरगवीचनहिठोर॥ जो॰
कैंहूतउपजाईपेव्याहकरांवेसो
र॥ भवनसूमग्रनपत्रिकावांयववा
परदेस॥ हुदासूमहैमूढकादासि

ग इकाभेसु ॥ अंतरामडुवाहाराकठन
३२ उतमसैंननहिजेर ॥ वाहारामडुअंत
राकठननीवगुरुघजोवीर ॥ म्रानहीं
विद्यानहीनहिंपडितनहितातिस
केकलंमध्यारहैनोग्रमावसकीरात

दिनकादीपकसूर्जैहैनिसकादी·
पकचंद॥दीपकधरमत्रिलोकका ६१
कुलकादीपहैनंद॥सिंहनीकेसु·
तपकैहैसावकसोवतनवहैनीठ॥गा
दभकेसुतवडूतेहैभारउठावतपी

ग २॥ जिसमतेकुलल्हिखणवईपकोम
३३ लोहहूत॥ देह्रगोकुंमनापजोगवऊते
उरेकहूत॥३॥ शमिउवांयवमकलखे
हहनजेश्राहि॥ जेहहजीटममथतेजिथ
यमजनमहेतहि॥ पणूभीग्रपना

33

पेट भर खावत है जग माहि ॥ जन्म
सुफल है तिनो का जो गुरु के भा
ई ॥ जो धरमी गुण वान है ते जीवता
जग माहि ॥ अफल जनम है तिनां
का जिन्हां धरम गुण नाहि ॥ वानी जि

ग सृकेरसवनीसनींहृटवीनीय
३४ भाग्यवनीवृहल्लभूमीसफल
34 जनेमतिहृतीय॥पा१पशकीपावा
कविषभस्मरोतंहैनीच॥ंनानेनिं
दाकरतनैहै॥पा२अपजसकेवीच॥

नरगोनेनीनेनगरगंधर्वोनेवेद ग
परनारीफलनारकोजामाताहः ५६
नदेष॥थ्यागनहोउफलवेदेहैवर
नसीलफलथ्याह॥भोगदानकेफ
लकेहैरतिफलसंततिथ्याह॥इति

ग श्रीराजनीतिशाकेग्रहमोध्यायः॥१

३५ दोहा॥ भुद्ववह्वीपरमानैंहूंकरैजो

परउपकार॥नछुद्रहैतिनौंकेजो

जपैनहरिउरदाय॥निरमलबुधहै

तिनौंकीजोजपैनहरिनाम॥सो

भापावैनगतेमैग्रहवाग्रह्म
नमान॥भोजनकरतेप्रथमहो
देवीकृमनिमित॥वरागनिहंमैसे
जाइहैकरैनेमइकनित॥काला
मित्रविग्रहकोकालसत्रुकोनासा

१ कालेषपतांपंडितकैरैकरणका
३८ रजदास॥कालसृष्टिउपतकरेष
पैकलकेमाहि॥सोवैज्ञागैकाल
मैकालछुटनननाहि॥कालपाइह
मनस्यहरनागलोकसभज्ञीव॥

कालपाइउतपतषपनकाल
जगतकोजीव॥कालजगतको
ग्रसतहैजगकोकल्पनकाल॥
ग्यानजोगभीकालहैकालकरै
प्रतिपाल॥रोगसोगसंतापदेहसं

ग नरदुवहीन॥ ३ नकोदारासममीत
१२ कौजैसेजलकोमीन॥ तवहग·
यप्रियवचनश्रुतसाबोध्यारागभाइ
तितकारनइसनानजोवडूदेवता
हभाइ॥ मानयरमनीसखदायर

प्रसरारिट्भारि॥ श्रीनवायनीना
रवट्टनोपतिसेवामारि॥ ठनमभोज
नजोकैरपतिकीईक्षाकारमरा
वोयाकेभगतमेभागवानवट्ट
नार॥ अपनेगुरुथेव्हाउकै। श्री

रा रगुरुछपरिजाइ॥अपनीइछासो
३८ रमिविभवारनीकरहाइ॥उपवान
मेगुनचवनेमहंमेश्रोगुनअनेक॥
सेहसमूढकोकाउंश्रेवनराग॥
धीअपक॥इतिश्रीराजनीतिशास्त्रे

नवमोध्यायः ॥९॥ दोह्रा रैगजेलो
ह्राकाछूजललनपत्रिधाबामपधान
जोकछुहोवेजगानेमेसभमैंश्रत
रज्ञान ॥ मेबद्दबनहिमूलीपे
जद्दोनगणकोनाम ॥ जौंघेटा

ग गलगाजेकेहृयविनाकिहृकाम
३९ सिरञ्चृतोभेमेहृकाकंटाजृतोण
३॥कहृंपा ३ भेचतरकोज्ञामेला
घउपाउ॥स्यालसञ्चकरनीवातन
जिभ्रूदवोलतेनाहि॥जोञ्चापने·

नहोवर्ईमोक्ष्यानेनकरहा ॥४॥ आल
मकृटकोपहषहितआतमघाने
कृरु मदनआपयनातिरनमातो
वनीअक्रूरा ॥ कृष्णदकुमित्रकृ
भार्यानिजनकृदेमकराज ॥

रा
५.

40

ङतमतनंवयकोटेषकेहूरद्दिरनते
भाज॥गजहूनींजगीतह्रंगग्रथम
ग्रसूनीगाइ॥श्वेतमयुरराजावले
रनकेविकटनजाइ॥वनराकरात
नहिवडनमेभाजनराऔरविप्रय॥व

ऊ नटी मै वेठ कै पे मो अनबोध
प्रीत रीत सा ची कै अहडष हृ ॥
हिविचित्र ॥ वाव न अछर मैक है
दो नो अछर मित्र ॥ इति श्री राजनीति
प्रमहेदस मो ध्यायः ॥ १ ॥ दोहा ॥ मी

ग
८८

तनसोकगगढुगढुगडुहकोसं
ग॥ग्रहग्रहिषेदबनवुगतीनो।
तजकुकुंग॥विद्याविषवुनष्या
सकोश्रोजीरनविषकोभोजन॥यो
हविषदारिद्रको॥तहणीविक

यकोरोज्ञ॥पकमैमेउपज्ञतन
ह्रीपेकनत्वोतपकज्ञात॥वेरह
छकेपेउमैज्ञैंकंाटेफलपान॥
जोगीमैश्रीराजनकुलनघरटकु
वश्रकनार॥थ्यानभरिहसोमत

ग नद्दीपेश्राटोपरकार॥पान·
४२ रूपारीहंसनूपहैगजसिंघ
हहुत॥जेंजैंप्रभुसचरी॥
सोंत्पांश्रयिक॥श्रनूप॥।
॥परवजनमदीपेकृते॥

यनविद्यागोहान॥ सोआगेदोर
तफिरैकरतपरमकल्यान॥ देना
लेनाछूछनाकहूनाउमहूनाइ॥
घटलछनाइहूप्रीतकेभोजनबा
इधवाइ॥ इतिश्रीराजनीतिशास्त्रे

ग पकाश्यो ध्यायः ॥ ॥ दोहा ॥ न दीन
८३ बीछंगीसरपमञ्जग्रप्रि नरपना
श्राठोक्याइतवारक्यारहीयेश्रा
पंसभार ॥ नरपवेष्णान्नावकग्रगति
वालकप्रकुरदप्रकताल ॥ पाइ ८

83

कोनानतनहीमेतोकरतजवा
ल॥ कंमारीजेहिकुलमैपुत्रहि
विद्यावीच॥ मित्रहिदीजैधरमैमे
मत्रुहिकारजनीच॥ कपिलास्तु
इकालामरपकालाब्रालणदेब

ग इनचंदकाउतगारुकानाराव।
४४ रिविविसेष ॥ नासेप्रीतचाहैसद
नासेकाव्यवहार ॥ तहांपरोघन
जांईहैनहांमीतकेनार ॥३८॥ बु
रातुरंविभलाकरावेदाघरूपावे

गुणस्रगरारौवे ॥ आपदामेकांइन
हिमित्र ॥ भीरपरेदीजेस्रणविंत्र ॥
दोहा ॥ जोमरवंसजतालषेतोआ
याकरदान ॥ आयेमेवरतेतवेसे
मानसहराजान ॥ थिरनमनोरथ

रा मानसी मगले देवा थीन ॥ तां ते र
४५ हे सतो ब सो जो मा उ घ परा वी र ॥
दीया जो ग्र ग ले जन म का के स मि
ले स र घा इ ॥ जे स व भू रा गा उ का मि
ले मा न को भा इ ॥ इति श्री राज नीति सा

45

त्रिद्वादशोध्यायः॥॥॥श्रोद्दा॥ ननम
ननममात्रुबद्दोइताउकतुश्रमा
म॥ मोपइतेतपदानकाश्रबद्दोब
तपरकाम॥ पावतेभ्रमण॰
मला॥ मिलेवांटानकेसाथ॥।

ग
५८

इंद्रलोकप्रमनप्राप्रनामस्ठकोजन
मग्रकाथ॥सतशानकरुणाम
हनयरमज्ञानैवेराग॥इहश्रयर
मकोनामकरैजेंकाहकोश्राग
सातम्रहिंसादानतपसीलजोग

वेगात् ॥ आरविद्दाद्दयारामकेनो
नपतेवरभागा ॥ मानवपौत्रवनपदं
ननपंकहृणाप्रकृतिविलोम मानेल
धनयरामकेयमीजनकोमेम ॥
भुवनानचितनवतयरामनदि ॥ १

ग
४२

वितवतआहार ॥ ननमसमाधुआ
रकाविधिकीनोव्यवहार ॥ राज
भोगसंपतसकलसुंदरनारीपा
ठित ॥ आयुवृद्धआरोगणनवआठ
यरमफलमित ॥ इतितनासैसी

नेविद्यातेश्रज्ञान॥मेनासैभावना
नेटारिइकीनेरान॥विमैनाथिन
रमतीरथिरजीवनतरहैनकोउ॥मं
नेयरमनछाउंधिअंश्रनतसहारक॥
होर॥इतिश्रीभाजनीतिशतकेइयोद

रा
५८ ध्यायः॥४॥दोहा॥मूलंकारहैपटवि-
नाजैंभोजनन्हुतहीन॥भावही-
नमैथुनकरैहरविज्ञानमली
न॥मामाजिसकाकूसजीपिता
धंनजयवीर॥वहभीहोवतका

98

लवमललगोमनकेतीर॥हेमं
उफलब्राह्मणराजनीतफल
राज॥नाभोगफल७३वेदेवृर
नमीलफलमाज॥वृचापउ
नमोकेरे हैवउनकेमग॥।

ग सुरजनसोमैडीकैरेडघतेरहैघ
४६ भाग॥कलनागोन्मउटमीथीराज
कैरेंजुकोइ॥ताहिनक्काउेलख
मीमदामहाइकरेहोइ॥गंयवेवि
गाहुरमहतपानमित्रपरवीन

५१

श्रिद्यानहृत्प्रीमानकथ्यापंवोनि
ननवीर ॥ हृन्ननविघेगक्षियेगते
श्रुपट्टैमेहितमाग ॥ रिगव्वाकोसे
वाकृजनभमसकरन्तविठश्राग
विद्यानपरागमीलनदिट्टानधर्मि

रा
५

50

कुखनाहि॥ तेनरपशुअधमारते
उरनरहतजगमाहि॥ मृगवको
मृगराजवनभूषेबिनचरंत॥
सैंकुलवंतविपतिपरेनीचकर्म
नकरंत॥ छंद॥ उत्तरामहारामछुइ

कीकीयेजहांत्रा॥ गर्वंतनकोग
ढेहानभूपतिराना॥ अथकारका
रकेहारकारनकोकीनोदीक्षा॥
जहांपवननहोवईतहांपवा
हीकीक्षा॥ जगमैउपाउसमका

ग
५१

कियासावंग्रथनमैमेकहा॥ उजे
नकीविनकीवनकेविधानाथ
करहा॥ इतिश्रीराजनीतिशास्त्रेव
र्दशोध्यायः॥४॥दोहा॥ ऊलकलं
ककिमकेनहीध्यायपीइविन

कौन॥ दुःखकिसकौप्राणपतनही
सहसहसीकरुकौन॥ नृपमित्रका
कूनहीसरापवतनिरविघसहोइ॥ स
धनारकौउनहीइजानतसम
कौइ॥ विंनातरासबंनीदनसहस

ग यात्रबलतेज॥कामात्ररमेला
१२ नन्हीहज्जनंवपरिनकौन॥क
पानिदीसैनहोभूपभिबकयुरदे
व॥फलदीजैफलपाईये॥फ
लैनफलविद्रमेव॥॥

मीठाबोलनतैसदासबलिहोइ
संतोष॥ तातेमिठाबोलियेदैन
दारिद्रदोष॥ साधनसोप्रियवच
ननहिसमसबवचननहिराम॥ ग्रंथ
हेतुसोधनहीवहरासनाकिसका

१ म॥भोजनकरनापनिछ्वारजिक
५२ घाटस्नसनान॥प्रथमपहराशिमा
सोवनातीनोनरकसमान॥जिस
किसकैघरजाइकैनाकछुपोश्र
नषाइ॥श्रहमेशुनभीनाकरै

तिसकिसकेघरजाइ॥ दुर्जनमी
ठेवचनकहतौनकाइतबार ५५
श्रसतउसकेरसनैमेकहिमाहि
विषहाय॥५॥इतिश्रीराजनीतिशा
पंचमाध्यायः॥५॥दोहा॥दुर्जनस

१५ थमसमानेहैनांतेसर्वविसेख॥म
नपरसेकोहुसमेउ।ननवणद
गेसब सना।वा।संसाभदेउनम॥
देकलेसोइ॥साथसगमोहिबनग
समसैगाधकोइ॥उनेनतांमोजाइसे

नटपहैगनवान ॥ जोमनिभूप-
नमापहैतैभीकालसमान ॥
समिसिवदनमालतीफूल
सायंसंगीत ॥ यासागरसंसार
मेयेघटसारप्रतीत मैजदीत

ग विनसंद्रीहृतविनमोक्षनन्ही
२५ न॥ श्रमकारीविशुमगचलनती
55 नोकरतत्रथीन॥ संपतिमेहराव
नहीविपतिविछनविद्याद॥ भी
रपेरथीरंनयरिवहमनछरुब

सदास॥ उबाकेलनसाधकौम
रथमानतस्रहि॥ चढ़िनजिन
तिनटेघके॥ वचननमाघनना
हि॥ ठं ट॥ सुघसेभेउघहर
घके॥ साहिसोकमघ॥ ।

ग

५८

56

विसमाहिमेराजभोगकैमाहिरो
गकैहै॥जैतमाहिमेसबदेहमेमेप
नकोहै॥विद्यामेमेवादरूपमे
नारीजोहै॥तपसीकोमेइंद्रीअन
कोजोमनवसकरनीसवे॥पद

मलापककोपकभे॥ज्ञानराद्म
भकेग्रभे॥त्रेयो·कंट॥वीणकाणि
मनमथपक॥चंदनवालणव
ड्विवेक॥ग्रस्ववउगलग्रोपका
नात॥तालीतात्रहरिनत्रहरिवान ठो॰ह्य

रा
५०
57

शास्र सकल विकार के मथ का
कोइ इह सार ॥ नारायण भजीऐ प्रेम
दा समरीऐ उपकार ॥ गुरगोविंद के
सभी मेले एक परमसु जान ॥ चा
नक को भाषा किए एक विसेनाप

तिनाम ॥ इति श्रीराजनीतिशास्त्रे षोडशोध्यायः ॥ १६ ॥

58